Indian J. Soc. & Pol. 11 (01): 101-104: 2024 **ISSN : 2348-0084 (PRINT)**
(July-December 2023), 29 February 2024 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारतीय परिप्रेक्ष्य में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी–आर्थिक चिंतन व सशक्त भारत

शिल्पी जायसवाल[1]

[1]पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, पंडित दीनदयाल उपाध्याय पीठ, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का यह विश्वास था कि कोई भी आर्थिक मॉडल सम्पूर्ण विश्व हेतु एक जैसा नहीं हो सकता। चूंकि प्रत्येक देश की अपनी अलग परिस्थितियां होती हैं, किसी भी देश के आर्थिक विकास में वहां की संस्कृति, भौगोलिक प्रस्थिति, विचारधारा का प्रभाव रहता है। पंडित दीनदयाल जी का आर्थिक चिंतन इन समस्त घटकों पर आधारित स्वदेशी आर्थिक चिंतन है। स्वदेशी आर्थिक चिंतन भारतीय अर्थव्यवस्था हेतु संजीवनी सरीखा कार्य करता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी यह स्पष्ट करते है कि समाजवादी, साम्यवादी एवं पूँजीवादी तीनों ही दर्शन एवं विचारधारा व्यक्ति के एकांकी विकास पर ही बल देता है। पंडित दीनदयाल व्यक्ति के संर्वागीण विकास हेतु एकात्म स्वदेशी आर्थिक नीति का प्रतिपादन करते है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के स्वदेशी आर्थिक चिंतन का विश्लेषण किया गया है तथा इसके साथ ही केन्द्र सरकार द्वारा पंडित दीनदयाल के आर्थिक चिंतन को क्रियान्वित करने की दिशा में प्रमुख योजनाओं का विश्लेषण भी किया गया है।

KEYWORDS: *पण्डित दीन दयाल उपाध्याय, राजनीतिक चिंतन, आर्थिक चिंतन, स्वदेशी*

अनेक पाश्चात्य विचारकों ने अपने वादों को प्रतिपादित किया...। मार्क्स तथा पाश्चात्य जगत के अर्थशास्त्रियों ने व्यक्ति को मात्र भौतिक प्राणी के रूप में ही देखा, उनका मानना था कि यदि व्यक्ति की शारीरिक व भौतिक आवश्यकताओं को संतुष्ट कर दिया तो व्यक्ति परम सुखी हो जायेगा।(गुप्त, 2019, पृ011–12) इस व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्तियों में अन्तर्निहित प्रेम, सौहार्द, सह–अस्तित्व, कर्त्तव्य–परायणता, बलिदान, समर्पण जैसे गुणों के दर्शन नहीं किये जा सकते हैं। (वही, पृ014) पंडित दीनदयाल जी की इस विवेचना के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पूंजीवादी व्यवस्था कभी भी विश्व का नेतृत्व नहीं कर सकती क्योंकि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक–पक्षीय अध्ययन करती है व एक–पक्षीय अध्ययन समष्टिगत विश्लेषण नहीं माना जा सकता। दीनदयाल जी का यह कथन है कि 'मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि पूंजीवादी व्यवस्था विश्व में कभी सफल नहीं हो सकती।''(उपाध्याय, 1986, पृ086)

कार्ल मार्क्स जो कि साम्यवाद के प्रेरक हैं, उन्होंने कहा कि बिना हिंसा व क्रांति के साम्यवाद संभव नहीं। कुछ समय तक तो मजदूरों की तानाशाही शासन चलेगा, इसके कुछ समय पश्चात् एक वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी। लाभ एवं पूँजी पर समाज का एकाधिकार होगा, साम्यवाद या कार्लमार्क्स ने रोटी तथा स्वतंत्रता का लालच दिया एवं कहा कि दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ।(वही, पृ079–80)

यहाँ दीनदयाल जी विश्लेषण करते हुए यह तर्क देते हैं कि यूरोप के कुछ देशों में सामाजिक क्रांति हुई व यह आशा की गई कि जब पूंजीवाद का स्थान समाजवाद ले लेगा तो परिस्थिति बदल जायेगी, धीरे–धीरे समाजवाद, राष्ट्रवाद के लिये एक ऐसा साधन बन गया, जिससे 'विश्व–शांति' एवं 'विश्व–एकता' को चुनौती मिली। समाजवाद ने शोषण को तो समाप्त कर दिया किंतु इसने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को नष्ट कर दिया।(सिंह,2015, पृ072–77)

कार्ल मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद विधान तब तक ही काम करता है, जब तक पूंजीवाद के स्थान पर सर्वहारा के अधिनायक के रूप में राज्य सर्वेसर्वा नहीं बन जाता, इसके पश्चात् तो राज्य स्वयं इस नियम को स्वीकार नहीं करता। 'प्रतिक्रांति' को रोकने हेतु राज्य अधिक निरकुंश बनता चला जाता है और यह एक कल्पना मात्र ही रह जाता है कि राज्य समाप्त हो जायेगा और राज्यविहीन समाज व्यवस्था जन्म लेगी। मानव में क्रिया, प्रतिक्रिया और संक्रिया की प्रक्रिया को रोकना ही मार्क्सवादी दर्शन है और यह एक प्रतिगामी एवं प्रगतिविरोधी कार्य है। इस प्रकार मार्क्स अपने ही दर्शन को झूठलाता है। इन दोनों की व्यवस्थाओं में मानव को सही रूप में नहीं समझा गया है।(पांडे, 2006,पृ095–96)

यहाँ दीनदयाल जी का यह मानना था कि वास्तव में हमारा नारा होना चाहिये– 'कमाने वाला खिलायेगा' तथा 'जन्मा सो खायेगा'। खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है, समाज में जो कमाते नहीं, वो भी खाते हैं। बच्चे, बूढ़े, रोगी, अपाहिज सबकी चिंता समाज को करनी होती है। प्रत्येक समाज इस कर्त्तव्य का निर्वाह करता है। इस कर्त्तव्य के निर्वाह की क्षमता पैदा करना ही अर्थव्यवस्था का मुख्य कार्य है।

भारत में अर्थव्यवस्था

मानव के भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति किसी भी अर्थव्यवस्था का न्यूनतम स्तर है। किसी भी प्रकार के अस्वास्थ्य की दशा में व्यक्ति को स्वस्थ बनाने की व्यवस्था करना तथा उसके निर्वाह की व्यवस्था करना भी समाज का मूल उद्देश्य एवं कर्त्तव्य है। रघुवंश में दिलीप का वर्णन करते हुए कालिदास यह कहते हैं **प्रजानां विनयाघानाद् रक्षणात् भरणादपि । स पिता पितरस्तासां**

1: Corresponding Author

केवलं जन्महेतवः।। (1/24) अर्थात् प्रजा के शिक्षण, रक्षण और भरण–पोषण की व्यवस्था के कारण वही उनके वास्तविक पिता था। उनके पिता तो केवल जन्मदाता थे। जिस भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा, उसकी व्याख्या यही है– **'भरणात् रक्षणात् च'** अर्थात् भरण तथा रक्षण के कारण वह भरत कहलाता है। इस देश में भरण–पोषण की यही गारंटी यदि न हो तो 'भरत' नाम सार्थक सिद्ध नहीं हो पायेगा। (उपाध्याय, उपरोक्त पृ0 72) इसके साथ ही हिंदू–अर्थशास्त्र 'एकात्म–मानववाद' पर आधारित है जिसमें व्यक्ति नहीं वरन् समष्टि महत्वपूर्ण है जिसे इस सूत्र से समझा जा सकता है– हिन्दू अर्थशास्त्र = व्यक्ति व परमार्थ (एकात्म–मानववाद एवं त्याग) एवं पश्चिमी अर्थशास्त्र = व्यक्ति व स्वार्थ (आत्मकेन्द्रित एवं लाभ) सूत्र में भिन्नतायें महत्त्वपूर्ण है। एकात्मवादी अर्थशास्त्र में व्यक्ति स्वयं की अपेक्षा समष्टि तथा परमार्थ जीता है तो वहीं पश्चिम का अर्थशास्त्र स्वार्थ एवं आत्मकेन्द्रिता को बढ़ाता है।

भारतीय अर्थशास्त्र के संदर्भ में कबीरदास जी कहते हैं–**''साई उतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय।।''** अर्थात् मेरा भी कार्य चले व साधु अथवा सज्जन सेवा भी कर संकू। यहाँ कबीरदास जी साधु अथवा सज्जन के अन्तर्गत किसी निश्चित स्थान के साधु व सज्जन को नहीं वरन् समस्त समष्टि के व्यक्तियों को सम्मिलित कर रहे, यही समष्टि के एकात्म–मानववादी अर्थशास्त्र अथवा आर्थिक दर्शन है। भारत में इसी एकात्म–मानववादी दृष्टि के कारण ही महर्षि दधीचि ने आसुरी शक्तियों को नष्ट करने हेतु वज्र के निर्माण हेतु अपनी अस्थियों का समर्पण स्वयं किया था। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत धर्म को आधारभूत पुरूषार्थ स्वीकृत किया गया है **'सुखस्य मूलम् धर्मः।।' धर्मस्य मूलमर्थ।** चाणक्य के इन कथनानुसार–धर्म के अभाव में अर्थ नहीं टिक सकता।। (उपाध्याय, 1958, पृ016)

भारतीय परिप्रेक्ष्य में कर्त्तव्य एवं अर्थव्यवस्था

दीनदयाल जी यह वर्णित करते हैं कि भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है, 'ईशावास्योनिषद्' में यह वर्णित किया गया है कि जो केवल भौतिकता को ही प्रमुखता देते हैं, उन्हें मात्र अंधकार प्राप्त होता है व जो मात्र अध्यात्मवाद को प्रमुखता देते हैं उन्हें गहन अंधकार प्राप्त होता है। इनमें से पहले कारकः भौतिकता के आधार पर मृत्यु को जीतना चाहिये व अध्यात्मवाद के आधार पर अमरता प्राप्ति का प्रयास करना चाहिये। शरीर हेतु भौतिक सुख एवं जीवन की सार्थकता प्राप्ति हेतु आध्यात्मिक सुख आवश्यक है। वास्तविकता तो यह है कि भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख पृथक नहीं है, यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दीनदयाल जी के अनुसार जितनी भौतिक आवश्यकताएं है उनकी पूर्ति होनी आवश्यक है इस सत्यता को तो हमने स्वीकृत कर लिया परंतु इसे सम्पूर्ण सत्य व सर्वस्व नहीं स्वीकारा। मनुष्य के शरीर, बुद्धि, मन एवं आत्मा की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति, उनकी इच्छाओं, आंकाक्षाओं की पूर्ति एवं संतुष्टि व व्यक्ति के संर्वागीण विकास की दृष्टि से व्यक्ति के समक्ष कर्त्तव्य के रूप में भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत 'चतुर्विध पुरूषार्थ की संकल्पना' है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की इच्छा प्रायः समस्त मानव जीवन की है व इसके नियमों को अनुपालन में समस्त मनुष्यों को आनंद की प्राप्ति भी होती है।(गोलवलकर, 2012,पृ020)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का मानना था कि अर्थव्यवस्था का निष्कर्ष व कसौटी मानव का सर्वांगीण विकास होना चाहिये, मानव का सुख अर्थोत्पादन का मुख्य साध्य है एवं मानवीय शक्ति उसका प्रमुख साधन। इस अर्थव्यवस्था के कारण समृद्धि तो बढ़ती है किंतु मानवता का विकास कुंठित हो जाता है, वह कल्याणकारी नहीं हो सकता। मानव का सर्वांगीण विकास हमारी अर्थनीति और अर्थव्यवस्था का लक्ष्य होना चाहिये।(कुलकर्णी, 2014, पृ010–11)

अतः इन पूंजीवाद एवं समाजवाद के चक्कर से पूर्णरूपेण मुक्त होकर मानवतावाद का विचार करें। वर्तमान में हम सभी पश्चिमी तकनीकी पर विश्वास कर रहे, उसे समाप्त करना होगा तथा ऐसी तकनीक का प्रयोग करना होगा जिसका प्रयोग मानवता के पक्ष में हों। दीनदयाल जी का यह मानना था कि जब तक एक–एक व्यक्ति की विशिष्टता–विविधता को ध्यान में रखकर उसके विकास का चिंतन नहीं करेगें, तब तक मानवता की सच्ची सेवा नहीं हो सकती।(उपाध्याय,2014,पृ079–80)

पंडित दीनदयाल जी का यह मानना था कि 'प्रत्येक को काम' भारतीय अर्थव्यवस्था का आधारभूत लक्ष्य होना चाहिये अर्थात् स्वस्थ व संबल व्यक्ति के लिये अपनी गृहस्थाश्रम की आयु में जीविकोपार्जन की व्यवस्था होनी चाहिये। ईश्वर ने सभी मनुष्यों को सामर्थ्य एवं शारीरिक बल प्रदान किया है किंतु ये सभी मनुष्य उत्पादक नहीं बन सकते। इस संदर्भ में पूंजी का सहयोग चाहिये। श्रम एवं पूँजी का संबंध पुरुष एवं प्रकृति संबंध सरीखा है।

वर्तमान समय में 'कमाने वाला खायेगा' के स्थान पर 'खाने वाला कमायेगा' यह लक्ष्य होना चाहिये व यही लक्ष्य हमें भारत की अर्थरचना के संदर्भ में रखनी चाहिये। चर्खे की जगह कताई की मशीनें तो चाहिये किंतु इन समस्त कार्यों के लिये स्वचालित मशीनें नही होनी चाहिये। उपाध्याय जी मनुष्यों पर मशीन के हावी हो जाने के विरोधी हैं। यंत्र मानव का सहायक है, प्रतिस्पर्धी नहीं, लेकिन जहाँ मानव श्रम को एक विनिमय की वस्तु मानता है व मनुष्य का मूल्यांकन रूपयों में होने लगा, वहीं मशीन मानव की प्रतिस्पर्धी बन चुका है। इसके पीछे दोषी वह अर्थव्यवस्था है जिसमें विवेक लुप्त हो जाता है। पंडित दीनदयाल जी का यह मानना है कि हमारी मशीन हमारी आर्थिक आवश्यकताओं के अनूकूल होनी चाहिये।(उपाध्याय, उपरोक्त पृ0 75) आर्थिक व्यवस्था में तीन मुख्य वस्तुएँ सन्निहित होती है– मनुष्य, श्रम एवं मशीन। इन तीनों का समन्वय ही अर्थव्यवस्था का उद्देश्य है। यदि किसी अर्थव्यवस्था में यह समन्वय नहीं तो, उसमें समन्वयहीनता के परिणामस्वरूप विषमताएँ उत्पन्न अवश्य होगी। मौलिक शोधन से ही इन परिणामों को नष्ट करने का उपाय करना होगा।

पंडित दीनदयाल जी यह स्वीकार करते हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था यदि भारी एवं बड़े उद्योगों तथा केन्द्रीकरण के दुष्चक्र में एक बार फँस गयी तो उन्हें वापस लौटाना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। अतः तृतीय विश्व के देशों को विशेषतः भारत को ग्रामोन्मुखी लघु उद्योगों वाली विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था को अपनाना चाहिये। उपाध्याय जी के मतानुसार बड़े उद्योगों का सर्वथा निषेध नहीं करना

चाहिये अपितु विकेन्द्रीकरण हेतु वे बड़े उद्योगों को छोटे उद्योगों पर अवलम्बित करना चाहते हैं। उनके अनुसार भारत व बड़े उद्योगों के स्थान पर लघु, कुटीर, कृषि आधारित ग्रामोद्योग को प्राथमिकता दी जानी चाहिये तथा इसके साथ टेक्नोलॉजी प्रशिक्षण व वित्तीय व्यवस्थाओं का उपयुक्त तंत्र बने तथा तदनुरूप नीति निर्धारण हों। यह आवश्यक है कि दीनदयाल जी की 'अपरिमात्रिक उद्योग नीति' की संकल्पना के आधार पर देश की उद्योग नीति बने। इस नीति के अन्तर्गत सभी को काम, विकेन्द्रीकरण, पारंपरिक कारीगरों व शिल्पकारों की पोषक, कृषि व ग्राम व्यवस्था की पूरक, मानव मूल्यों के अनुरूप, यंत्र प्रधान न होकर श्रम प्रधान वाली उद्योग नीति होगी। (गुप्ता,2018, पृ0240–242)

दीनदयाल जी आगे विश्लेषण करते हुए यह कहते हैं कि यह हमारे देश की विडम्बना है कि सत्ता हस्तान्तरण की प्रक्रिया आज वर्तमान समय तक जारी है, अनेकों सरकारें आई किंतु देश का जो सर्वांगीण विकास होना चाहिये उससे हमारा देश व आम नागरिक दोनों ही वंचित है। पूंजीवाद व साम्यवाद की जिन अवधारणाओं को अन्य देशों ने अपनाने से इंकार कर दिया, उसे भारतीय जनमानस पर जबरन थोपा जा रहा। अब हमारे देश के बुद्धिजीवी अब गहन विचार मंथन में जुटे है कि शासन चलाने के लिये किसी अलग 'स्वदेशी आर्थिक चिंतन' का होना अत्यन्त आवश्यक है।(कुमार 2021, पृ0 2) दीनदयाल जी ने इस बात पर जोर दिया है कि हमारा उपभोग एवं उत्पादन तंत्र हमारे जीवन शैली के तरीके से अलग नहीं होगा, अतः 'सादा जीवन उच्च विचार' के सिद्धांत पर आधारित स्थानीय, विकेन्द्रित स्वावलंबी एवं प्रकृति प्रेमी मॉडल बनाया जाना चाहिये। हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि लघु, सुंदर एवं टिकाऊ दोनों ही होता है। अतः इसलिये अर्थव्यवस्था के विभिन्न भागों एवं क्षेत्रों में सहकारी संस्थाओं का नेटवर्क विकेन्द्रित अर्थतंत्र को एक आधार–स्तम्भ के रूप में कार्य कर सकते हैं।(गुप्ता, उपरोक्त, पृ0 208–209)

वर्तमान समय में सरकार की योजनायें एवं पंडित दीनदयाल जी के विचारों का प्रभाव तथा प्रासंगिकता

हमारी अर्थरचना किस प्रकार का हो, इसकी दिशा क्या हो? जिससे हमारा भारत राष्ट्र एक विकसित देश की श्रेणी में सम्मिलित हो सके। हम सभी भारतीय एक लम्बी अवधि से ही अपनी अर्थरचना हेतु एक विदेशी मॉडल की तलाश करते आये है। कभी हमने पूँजीवादी व्यवस्था को अपनाया तो कभी साम्यवादी व्यवस्था। पंडित जी अर्थरचना के इन दोनों व्यवस्थाओं अथवा मॉडलों की सीमाओं का तर्कपूर्ण आलोचना करते हैं तथा एक ऐसे व्यवस्था की स्थापना करना चाहते हैं, जो कि विकास के साथ ही साथ हमारे 'मानवतत्त्व' को भी विकसित करें।

भारत की राष्ट्रीय आय का तीसरा हिस्सा भारतीय जनसंख्या के 5 प्रतिशत नागरिकों के पास है, इसका तात्पर्य यह है कि अमीर और अधिक अमीर तथा निर्धन और अधिक निर्धन हो रह हैं। इन आर्थिक विषमताओं की समस्या के समाधान के संदर्भ में ही जन–धन–योजना तथा कम दामों पर मूलभूत अधिकार बी0पी0एल0 परिवारों तक पहुँचायी जा रही। इसी दिशा में स्किल डेवलपमेंट के तहत बेरोजगार युवक व युवतियाँ अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुये अपनी प्रतिभा को विकसित करें तथा रोजगार अथवा स्व–रोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बन सकते हैं। उद्यमशीलता को विकसित कर नए उद्योगों तथा संगठनों की स्थापना करके 'मेक इन इंडिया' के तहत रोजगार के नये अवसर उपलब्ध कराये जा रहे हैं। गूगल व यू–ट्यूब जैसे माध्यमों से न केवल ज्ञान में वृद्धि संभव है बल्कि इनके साथ ही पूरे विश्व में उद्योगों तथा स्व–रोजगारों तक व्यक्तियों की पहुँच संभव है।

शिक्षा व चिकित्सा सुविधाएँ अत्यन्त मंहगी हैं, जिसके कारण यह आम जनता के पहुँच से बाहर है। भारत सरकार कम लागत पर चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान करने हेतु 'आयुष्मान भारत' मिशन के तहत स्वास्थ्य सुरक्षा योजना लायी गयी है। आम जनता व नागरिक विदेशी कंपनियों की दवाएँ न खरीदकर जेनेरिक दवाओं का प्रयोग करें जो कि कम कीमत पर सरकारी दवा के दुकानों पर उपलब्ध है। (कुमार,2018, पृ073–74) वर्तमान समय में केन्द्र सरकार द्वारा प्रत्येक नागरिकों को उद्यमी व आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में हम यह देख सकते हैं कि 'प्रधानमंत्री कौशल विकास' तथा 'स्किल इंडिया' के माध्यम से अनेक छात्र–छात्राओं में उस योग्यता का निर्माण किया जा रहा है कि वे अपने हुनर, कौशल का उपर्युक्त विकास कर अपनी आजीविका के अवसर को प्राप्त कर सकें। वर्तमान समय में विभिन्न मद्याविद्यालयों में वोकेशनल शिक्षा भी प्रदान की जा रही तथा इसके साथ छात्रों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है, इस संदर्भ में केन्द्र सरकार का एक सराहनीय एवं सकारात्मक प्रयास है। वर्तमान समय में इन सभी सुविधाओं को प्राप्त करके छात्र इस योग्य बन रहे हैं कि वे अपने हुनर, कौशल को और भी अधिक प्रभावी बनाकर अपनी क्षमता के अनुसार स्वयं के व्यवसाय को प्रारम्भ कर सकें।(शुक्ला, 2021, पृ051)

यदि केन्द्र सरकार द्वारा क्रियान्वित 'मेक इन इण्डिया' योजना का उदाहरण लें तो यह योजना वैश्वीकरण के युग में भारत के निर्माण एवं रोजगार के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अत्यन्त प्रभावी कार्यक्रम है। हालांकि इस योजना का लक्ष्य दूरगामी है व अपने लक्ष्य सीमा तक पहुंचते–पहुंचते यह योजना आत्मनिर्भर भारत की स्थापना में अत्यन्त प्रभावी योजना व कार्यक्रम है। पंडित दीनदयाल जी के मन में पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक समृद्धि व खुशहाली पहुंचाने की चिंता थी, उनके वैचारिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत जिस अंत्योदय सम्बन्धी अवधारणा का वर्णन होता है, यह समाज के अंतिम पंक्ति पर खड़े व्यक्ति को स्वावलम्बी, सबंल व सक्षम बनाने की बलवती इच्छा थी।

यदि दीनदयाल जी के विचारों के प्रभावकारिता को देखा जाये तो वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शिता–पूर्ण मार्गदर्शन में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में 'लोकल से वोकल योजना' व कार्यक्रम एक प्रभावी कदम है, पंडित दीनदयाल जी के अंत्योदय सम्बन्धी चिंतन की क्रियान्वियता मोदी जी द्वारा क्रियान्वित विभिन्न कार्यक्रमों व योजनाओं के रूप में स्पष्टतः दिखायी पड़ती है। देश में कोविड–19 महामारी प्रबंधन, वैक्सीन का निर्माण व प्रबंध, सामूहिक टीकाकरण अभियान इत्यादि अनेकों तकनीकी सिस्टम ने सम्पूर्ण विश्व के समक्ष हमारे देश की क्षमताओं को सिद्ध

किया है। इन्हीं क्षमताओं के आधार पर ही कोरोना वायरस से लड़ने में सक्षम रहे। यही था पडित जी का स्वदेशी आर्थिक मॉडल।

वर्तमान समय में स्टार्ट–अप के रूप एक सशक्त भारत की नीव पड़ी है, वर्ष 2020–2021 के दौरान 2.5 लाख से अधिक टेडमार्क पंजीकृत किया जाना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि पंजीकृत स्टार्ट–अप में, रोजगार सृजन में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। 48,093 स्टार्ट अप के आधार पर 5,49,842 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुआ है। केन्द्र सरकार द्वारा क्रियान्वित दीनदयाल अंत्योदय योजना एक व्यापक व प्रभावी योजना है जिसका उद्देश्य कौशल विकास एवं अन्य माध्यमों से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी एवं ग्रामीण गरीबों का उत्थान करना है।

पंडित दीनदयाल जी के अंत्योदय सम्बन्धी अवधारणा व सशक्त भारत के सही रूप से क्रियान्वयन हेतु ही प्रधानमंत्री मोदी ने दिनांक 17.09.2023 को पारंपरिक कौशल से जुड़े देश के लाखों परिवारों हेतु 'प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना' को लॉच किया। इसके अन्तर्गत पारंपरिक कारीगरों को प्रशिक्षण, टूलकिट एवं रियायती दर पर तीन लाख रूपये तक के ऋण की सुविधा प्रदान की जायेगी। इस महत्वपूर्ण योजना का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने यह कहा कि वर्तमान में सरकार की योजना वंचितों को प्रमुखता प्रदान करते हुये उन्हें वरीयता देना है। प्रस्तुत प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना की लागत 13 हजार करोड़ रूपये तक की है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री मोदी ने कारीगरों को विश्वकर्मा की संज्ञा प्रदान करते हुये यह कहा कि हाथ के हुनर से, औजारों से, परंपरागत रूप से काम करने वाले लाखों की संख्या में जो परिवार हैं, उनके लिये प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना एक आशा की किरण के रूप में सभी के समक्ष आयी है। प्रस्तुत योजना में 18 अलग–अलग तरह का कार्य करने वाले विश्वकर्मा भाइयों पर ध्यान आकृष्ट किया गया। केन्द्र सरकार की प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के अन्तर्गत हस्तशिल्प एवं कामगार की पुरानी परंपरा को नई तकनीक से जोड़ने जा रही है। इन हुनरमंदों की परंपरा को अब वर्तमान सरकार द्वारा संरक्षित किया जायेगा। वर्तमान समय में यह अत्यन्त आवश्यक है कि छोटे उद्योगों को भारत के भविष्य के रूप में देखा जाये, इस संदर्भ में सरकार इनको बैंक से भी जोड़ेगी व पर्याप्त सहायता भी प्रदान करेगी। इन लाभार्थियों का पोर्टल पर पंजीकरण भी होगा तथा कम व्यय में अच्छा सामान तैयार करने का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जायेगा। (दैनिक जगरण, 18 सितम्बर 2023)

सरकार के कार्यों का विश्लेषण किया जाये तो पिछले कुछ वर्षों से स्वदेशी एवं आत्मनिर्भर भारत की चर्चा अत्यन्त प्रासंगिक है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत जी ने भी स्वदेशी आर्थिक मॉडल का सुझाव दिया था। सरकार द्वारा इस प्रकार की नीतियों को अंगीकृत किया गया है जिसके अन्तर्गत प्रधानमंत्री जी ने भी राष्ट्र के नाम संबोधन में 'आत्म निर्भर भारत अभियान' की घोषणा की। इसी संदर्भ में प्रधानमंत्री जी ने 20 लाख करोड़ रूपये के आर्थिक पैकेज की भी घोषणा की। इस प्रकार की घोषणा से भारत के पारंपरिक उद्योग जो कि नेपथ्य में जाते हुये प्रतीत हो रहे थे, वे सभी पुनः तकनीकयुक्त हो रहे, जिससे भारत का आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास सुदृढ़ रूप से हो रहा। राष्ट्र को संबोधित करते हुये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत को आत्मनिर्भर व सशक्त बनाने हेतु पाँच स्तंभों का भी वर्णन किया, जिसके अन्तर्गत अर्थव्यवस्था, इन्फ्रास्ट्रक्चर, सिस्टम टेक्नोलॉजी ड्रिवेन व डिमांड एवं सप्लाई की ताकत के प्रयोग पर बल दिया जा रहा। इस प्रकार के पैकेज संघर्षरत लघु, कुटीर एवं सूक्ष्म उद्योगों हेतु एक संजीवनी सरीखा है जिसका सकारात्मक लाभ गाँव, गरीब एवं छोटे कस्बों के लोगों को होगा, जिसके परिणामतः गाँव आत्मनिर्भर होगें, परिणामस्वरूप देश का आत्मनिर्भर होना स्वाभाविक है।

REFERENCES

गुप्त, श्याम बाबू. (2019) *एकात्म मानव दर्शन.* कानपुर अराधना ब्रदर्स

उपाध्याय,दीनदयाल.(1986) *एकात्म मानववाद.* नोएडा जागृति प्रकाशन

सिंह, शरद (2015). *राष्ट्रवादी व्यक्तित्व दीनदयाल उपाध्याय.* नई दिल्ली : सामायिक बुक्स

पांडे, प्रीति.(2006) *डॉ0 अम्बेडकर और पं0 दीनदयाल.* जयपुर : ए0बी0डी0 पब्लिशस

सिंह, ओम प्रकाश. *एकात्म मानववाद का आर्थिक विकास दर्शन.* महामना मालवीय पत्रकारिता संस्थान, काशी विद्यापीठ,

उपाध्याय, दीनदयाल.(1958) *भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा.* लखनऊ : राजधर्म पुस्तक प्रकाशन.

गोलवलकर, माधव सदाशिव. उपाध्याय, दीनदयाल. ठेंगड़ी, दत्तोपंत. (2012) *एकात्म मानव दर्शन.* नयी दिल्ली : सुरूचि प्रकाशन

कुलकर्णी, शरद अनन्त.(2014) *पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन : एकात्म अर्थनीति.* खण्ड–04, नई दिल्ली : सुरूचि

शर्मा, महेश चन्द्र.(2017) *दीनदयाल उपाध्याय. संपूर्ण वाङ्मय–खंड–सांतवा.* नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन

उपाध्याय, दीनदयाल.(2014) *राष्ट्र चिंतन.* लखनऊ : लोकहित

गुप्ता, बजरंग लाल (2018) *हिन्दू अर्थचिंतन : दृष्टि एवं दिशा.* दिल्ली : प्रभात प्रकाशन

कुमार, सुनिल. पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के स्वदेशी आर्थिक चिंतन का समीक्षात्मक विश्लेषण- *Shikshan Sanshodhan.* Vol. 04, Issue-11, नवम्बर 2021

कुमार, ललित (2018). आर्थिक विषमता आखिर कैसे हो दूर. *सुलभ इंडिया.* सितम्बर 2018

शुक्ला, सन्नी. दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता. *International Journal of Hindi Reseearch.* Vol. 07, Issue-04, 2021

दैनिक जागरण, वाराणसी संस्करण, 18 सितम्बर 2023